Shrimad
Rajchandra
Mission
Delhi

अपूर्व अवसर प्रतियोगिता

Open Book Exam | Year 2021

अपूर्व अवसर काव्य और श्री गुरु के विवेचन पर आधारित

नाम : _____ जन्म तिथि : _____

पता : _____

फ़ोन : _____ Email: _____

जमा करने की तारीख : _____

प्रमाणिकता-पत्र

परम कृपालु देव श्रीमद् राजचंद्र जी द्वारा रचित 'अपूर्व अवसर' की इस प्रतियोगिता में मैंने प्रमाणिकता पूर्वक भाग लिया है। कोई भी उत्तर किसी से नकल नहीं किए या पूछ कर नहीं लिखे हैं। श्री गुरु द्वारा लिखित अपूर्व अवसर की पुस्तक अथवा सत्संगों के आधार पर मैंने यथा-शक्ति चिंतन करके इन उत्तरों को लिखा है। इस प्रतियोगिता का जो भी निर्णय आए, वह मुझे मान्य है।

तारीख _____ **परीक्षार्थी के हस्ताक्षर** _____

परीक्षा नियमावली

1. यह परीक्षा पत्र 150 अंकों का है।

2. यह परीक्षा तीन खंडों में विभाजित है व इसके सभी खण्ड करने आवश्यक हैं।

   2.1. खण्ड 1 — गाथा 1 से 12 तक (60 अंक)
   2.2. खण्ड 2 — अपूर्व अवसर पुस्तक में उल्लेखित वचनामृत जी के आधार पर (40 अंक)
   2.3. खण्ड 3 — गाथा 13 से 21 तक (50 अंक)

3. परीक्षा प्रतियोगिता जुलाई 25 से प्रारंभ है व उत्तरवही भेजने की अंतिम तिथि सितंबर 15, 2021 है।

4. इस प्रतियोगिता में प्रश्नों के उत्तर श्री गुरु द्वारा लिखित हिन्दी पुस्तक 'अपूर्व अवसर' के आधार पर ही होने चाहिए।

5. परीक्षा हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी में दी जा सकती है। मिश्रित भाषा मान्य नहीं होगी।

6. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर उत्तरवही में निर्दिष्ट स्थान के भीतर ही लिखना है।

7. किसी के पास प्रत्यक्ष रूप से उत्तर प्राप्त करना अथवा नकल करने की मनाही है।

प्रश्न-उत्तरवही (Solved Paper) को जमा करने के तीन ढंग हैं :

1. प्रश्न-उत्तरवही में उत्तर लिखकर उसकी फोटो को इस Email: exam@srmdelhi.com पर भेजें।

2. प्रश्न-उत्तरवही में उत्तर लिखकर उसे SRM के ऑफ़िस में courier करें। पता:

Shrimad Rajchandra Mission Delhi,
518-519, Ring Road Mall, Mangalam Place,
Rohini Sec-3, New Delhi 110085, India

3. प्रश्न-उत्तरवही में उत्तर लिखकर प्रत्यक्ष समागम में Information Desk पर जमा करें।

• उत्तरवही प्राप्त होते ही SMS व Email द्वारा अवगत कराया जाएगा। प्रत्येक साधक को प्राप्त अंक की जानकारी भी SMS व Email पर दी जाएगी।

• प्रतियोगिता परिणाम नवंबर 19, 2021 कार्तिक पूर्णिमा, श्रीमद् परम कृपालु देव जी के जन्मोत्सव पर घोषित किया जाएगा।

पारितोषिक (Special Reward)

इस परीक्षा के तहत सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 10 साधकों को पुरस्कार के रूप में श्री गुरु के साथ निजी समागम में ईडर वैराग्य क्षेत्र में आने का अवसर मिलेगा। यह समागम नव-वर्ष के समय में चार दिनों का होगा।

खण्ड 1: (गाथा 1 से 12)
अंक : 60

[प्रश्न - 1] निम्नलिखित गाथा की पंक्तियों में रिक्त स्थान भरें : .....10 अंक

1. अंत में होवुं _____ में लीन जब
2. जन्म मरण में हो नहीं _____
3. _____ आसन और मन में नहीं क्षोभ हो
4. _____ क्षेत्र और काल भाव प्रतिबंध बिन
5. शत्रु _____ प्रति वर्ते समदर्शिता
6. स्वरूप लक्ष्य से _____ आधीन जब
7. देह भिन्न केवल _____ का ज्ञान अब
8. मात्र देह ये _____ हेतु होय जब
9. क्रोध के प्रति वर्ते _____ स्वभाव से
10. एकाकी विचरेंगे जब _____ में
11. _____ जाए पर माया होवे न रोम में
12. विचरेंगे कब_____ पुरुष के पंथ पर
13. पंच प्रमाद में नहीं हो मन को _____ जब
14. बहु _____ कर्त्ता के प्रति भी क्रोध न हो
15. _____ तीन संक्षिप्त योग की
16. द्रव्यभाव _____ निर्ग्रंथ सिद्ध जब
17. सर्व संबंध का _____ तीक्ष्ण छेद कर
18. _____ उठे तो दीनभाव का मान जब
19. घोर _____ में भी मन को ताप नहीं
20. _____ मित्र का जैसे पाया योग तब

[प्रश्न - 2] निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक या दो शब्दों में दें : ..... 15 अंक

1. मन, वचन, काया की प्रवृत्ति को कब तक संकुचित करना चाहिए? [गाथा-4]

_____

2. जब देह का उपयोग मात्र संयम के लिए ही हो और किसी भी प्रकार से मूर्छित भाव के प्रभाव में जीवन व्यतीत ना हो। ऐसे अपूर्व अवसर की भावना कौन सी गाथा में करी है?

_____

3. वर्तमान संयम पुरुषार्थ को जगाने के लिए 'अपूर्व अवसर' में कितनी गाथाएँ हैं? [विषय व्याख्या]

_____

4. बाह्य निर्ग्रंथता में किसके शुभारंभ से अंतरंग निर्ग्रंथता का मार्ग उघड़ता है? [गाथा-1]

_____

5. साधक की बाहर भागती वृत्तियाँ किस वैराग्य की अवस्था में ठहरने लगती हैं? [विषय व्याख्या]

_____

6. शुभ-अशुभ भावों की परिधि में स्वयं को उलझाए रखना, इसे क्या कहते हैं? [गाथा-6]

_____

7. मोक्ष मार्ग पर चलने के दो अन्योन्य आश्रित साधन कौन से हैं? [गाथा-3]

_____

8. पुदगल जगत से शाश्वत सुख की अपेक्षा रखना इसे क्या कहा जाता है? [गाथा-3]

_____

9. राग-द्वेष से मुक्त होने का प्रथम सोपान क्या है? [गाथा-6]

_____

10. साधक के जीवन में साधना के दो प्रमुख स्तर कौन से हैं? [गाथा-2]

_____

11. जीव को यदि जीवन के बदलते संयोगों में उसके सनातन स्वरूप का स्मरण बना रहे इसे क्या कहा जाता है? [गाथा-5]

_____

12. जैन शास्त्रों में मोह क्षय के दो स्तर कौन से हैं? [गाथा-3]

_____

13. आत्म भाव में स्थिरता के लिए साधक को किन प्रवृत्तियों को संक्षिप्त करना चाहिए? [गाथा-4]

_____

14. 'प्रमाद' का आध्यात्मिक अर्थ क्या है? [गाथा-6]

_____

15. मान व क्रोध कषाय के प्रतिपक्षी भाव कौन से हैं? [गाथा-8]

_____

[प्रश्न - 3] रेखांकित शब्दों को बदल कर, निम्नलिखित वाक्यों को सही करें : .....10 अंक

1. स्वरूप संवेदन के पश्चात् साधक की जनमोजन्म की इंद्रिय-आसक्ति टूटती है। [गाथा-6]

2. सत्संग हमारी बुद्धि में मैत्री गुण को प्रकट करने का मार्ग दर्शन देता है। [गाथा-1]

3. साधक के जीवन में वही क्षण अपूर्व है, जहाँ द्रव्य से और भाव से समाधि प्रकट होती है। [गाथा-9]

4. स्व-द्रव्य के स्वरूप का अनुचित बोध होने से साधना में आते दृश्य में उलझे रहना क्षेत्र प्रतिबंध कहलाता है। [गाथा-6]

5. देह का संबंध कुछ काल पर्यंत ही संभव है और इसका उपयोग स्वयं को जानने के साधन रूप करना ही आत्म-धर्म है। [गाथा-8]

6. जब जीव स्वत: ही स्वभाव-सन्मुख होने लगता है, तब विचार में सत्संग और आचार में संयम सहज भाव में आने लगते हैं। [गाथा-3]

7. साधना के सूक्ष्म मार्ग और गूढ़ रहस्य को समझ कर मात्र शुभ-अशुभ भावों का निर्णायक होना, साधक की अनुभव यात्रा में वेग लाता है। [गाथा-6]

8. जो अपना नहीं है, उससे सुख की इच्छा लालच कहलाती है। [गाथा-8]

9. सद्गुरु द्वारा दी हुई प्रत्येक साधना का परिणाम ही यही है कि जीव बंधन से दुख का अनुभव कर सके। [गा•1]

10. सभी विषय भोग क्षणिक हैं, उनसे शाश्वत के सुख की अपेक्षा रखना मूर्खता है। [गाथा-2]

[प्रश्न - 4] सही अपेक्षा अथवा अपेक्षाओं को (tick) करें : .....10 अंक

1. आंतरिक रसधार कैसे उजागर होती है? [गाथा-2]

A. सत्संग सुनने से
B. सुविचारणा से
C. सद्गुरु द्वारा दी गई साधना से
D. शुभ कर्म करने से

2. माया शब्द से क्या अर्थ समझना चाहिए? [गाथा-7]

A. संस्कार
B. कपट
C. ईश्वर के स्वरूप पर आवरण शक्ति
D. अनुरक्ति

3. महत्त पुरुष का पंथ क्या है? [गाथा-1]

A. सत्संग व साधना का मार्ग
B. प्रार्थना का मार्ग
C. ईश्वर रमणता का मार्ग
D. उपरोक्त सभी

4. साधना मार्ग पर अवलंबन का विसर्जन कब होता है? [गाथा-5]

A. निज स्वरूप की लीनता में
B. निज स्वरूप के लक्ष्य में
C. अपूर्व अवसर की प्रतीक्षा में
D. सद्गुरु की शरण आने से

5. समदर्शिता का अर्थ क्या है? [गाथा-10]

A. विवेक पूरित प्रेम
B. समानता का अनुभव
C. सबके साथ एक जैसा व्यवहार करना
D. उपरोक्त सभी

6. उदासीन वृत्ति का क्या आशय कहा गया है? [गाथा-2]

A. दुखी नहीं होना
B. उदास हो रहना
C. सुख की अपेक्षा नहीं रखना
D. स्वरूप समझ कर शुभाशुभ भावों से अप्रभावित रहना

7. मोह क्षय का दूसरा स्तर कौन सा है? [गाथा-3]

A. दर्शन मोह का क्षय
B. पुदगल मोह
C. विवेकहीनता
D. चारित्र मोह का क्षय

8. दर्शन-मोह के मंद होने से साधक का क्या अनुभव होता है? [गाथा-3]

A. देह और आत्मा अलग दिखने लगती है
B. मान्यता पलटती है
C. कुछ आंतरिक वेदन अनुभव में आते हैं
D. प्रकाश दिखता है

9. 'मन-संयम' से आप क्या समझते हैं? [गाथा-5]

A. मन की भटकन को प्रयासपूर्वक रोकना
B. मन को नियम में बांधना
C. मन की इच्छा के विरुद्ध चलना
D. मन की भूत-भविष्य की भटकन क्षीण होने लगे

10. जब साधक स्वयं के बंधन को स्वयं में ही देखता है, बाहर नहीं, यह वैराग्य की कौन सी अवस्था है?

A. यतमान वैराग्य
B. व्यतिरेक वैराग्य
C. एक इंद्रिय वैराग्य
D. वशीकार वैराग्य

11. मान कषाय उठने पर साधक को क्या विचार करना योग्य है। [गाथा-7]

A. अपनी बेहोशियों को याद करना चाहिए
B. दूसरों के गुणों को याद करना चाहिए
C. अनंत ज्ञानियों की दशा के सामने हम कुछ नहीं
D. साक्षी होना चाहिए

12. गाथा-11 के आधार पर परम मित्रता के भाव से क्या आशय है?

A. निर्भयता
B. समानता
C. उपकारिता
D. सहयोगिता
E. उपरोक्त सभी

13. कषाय भाव क्या है? [गाथा-7]

A. क्रोध, मान, माया, लोभ
B. संसार परिभ्रमण का कारण
C. संसार की आमदनी का कारण
D. उपरोक्त सभी

14. साधना पथ पर साधक को किस अनुभव के कारण देह के स्वरूप का यथार्थ भान होता है? [गाथा-8]

A. सद्गुरु में ईश्वर तत्व देखने से
B. देह और आत्मा अलग हैं, इस विचार से
C. चैतन्य रस के अनुभव से
D. सत्संग सुनने से

15. मनुष्य के जीवन में रहे सभी संबंधों को तीक्ष्ण कहा है, क्यों? [गाथा-1]

A. संबंध तीक्ष्ण होते हैं
B. उनमें रही हमारी आसक्ति तीक्ष्ण है
C. संबंधों के प्रति रही अपेक्षा तीक्ष्ण है
D. उपरोक्त कोई भी नहीं

16. पूर्व 'कषाय' उदय के प्रसंग में साधक किस शक्ति के आधार पर नए कषायों का बंध नहीं करता? [ग.12]

A. श्रवण शक्ति
B. आत्मिक बल
C. विचार शक्ति
D. स्व-स्वरूप की अनुभूति

17. साधक में रहे मूलभूत संस्कार भय संज्ञा का विसर्जन किन साधनों से होता है? [गाथा-4]

A. बाह्य साधन संकलित करते रहना
B. सत्संग और साधना
C. विचारों से भय वृत्ति को हटाना
D. उस स्थिति से दूर रहने का आयोजन करना

18. मोक्ष मार्ग पर चलते हुए 'पुरुषार्थ' शब्द से आप क्या समझते हैं? [गाथा-4]

A. बहुत प्रयास करना
B. ऐसी स्थति के अनुभव के लिए खूब मेहनत करना
C. सम्यक् दिशा में प्रयास
D. उपरोक्त सभी

19. अध्यात्म मार्ग में दुविधा के मूल कारण को क्षीण करने का अभ्यास करना क्या कहलाता है? [गाथा-6]

A. बाह्य व्यवहार को अच्छा रखने का प्रयास करना
B. विषय-कषाय आने पर उन्हें दबा देना
C. व्यवहार मार्ग
D. उपरोक्त कोई भी नहीं

20. साधक उदय काल के आधीन क्यों जीता है? [गाथा-6]

A. स्व-संवेदन की सहज धारा से संसार में चुनाव रहित होने लगता है
B. कर्म उदय अब कर्म-निवृत्ति के लिए होते हैं।
C. वीतराग भाव के प्रति आकर्षण अधिक रहता है
D. उपरोक्त सभी

[प्रश्न - 5] निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर कम से कम शब्दों में अथवा एक पंक्ति में दें : .....10 अंक

1. प्रमाद किसे कहते हैं?

2. संयम क्या है?

3. साधक को पाँच इंद्रिय के विविध विषयों में राग-द्वेष की धारणा कब नहीं होती ?

4. बाह्य अवलंबन का विसर्जन कब होता है?

5. श्रीमद् जी ने किस गाथा में साधक के भीतर साधु के बाह्य चारित्र की भावना सक्रिय करी है?

6. गुरु-आज्ञा किसे कहते हैं?

7. ज्ञानी को मोक्ष की इच्छा क्यों नहीं रहती?

8. साधक व सिद्ध के अनुभव की जाति समान होने पर भी भिन्नता किस अपेक्षा से कही जाती है?

9. मनुष्य को चार प्रकार से कौन से प्रतिबंध होते हैं?

10. भारतीय यौगिक संस्कृति में श्मशान भूमि को एकांत साधना के लिए उपयोगी क्यों माना जाता है?

[प्रश्न - 6] निम्नलिखित पंक्तियों का आशय केवल 2 पंक्तियों में बतायें : ..... 5 अंक

1. माया के प्रति माया साक्षी भाव की

2. दर्शन मोह के क्षय से उपजा बोध जो

3. मात्र देह ये संयम हेतु होय जब

4. जन्म-मरण में हो नहीं नयूनाधिकता

5. वह भी क्षण-क्षण घटती जाती स्थिति में

खण्ड 2: (वचनामृत विभाग)
अंक : 40

[प्रश्न - 7] निम्नलिखित रिक्त स्थान भरें :.....10 अंक

1. मोक्ष दुर्लभ नहीं; _____ दुर्लभ है।

2. दर्शन मोह नष्ट हो जाने से ज्ञानी के मार्ग में _____ समुत्पन्न होती है।

3. रागादि की निवृत्ति एक _____ के सिवाए दूसरी प्रकार से होती नहीं है।

4. विषय-कषाय सहित _____ में जाया नहीं जाता।

5. जहाँ _____ है, वहाँ राग-द्वेष नहीं है।

6. समदर्शी सत् को _____ जानता है।

7. जब सर्वथा सर्व प्रकार से _____ का क्षय हो जाए, तभी केवलज्ञान कहा जाता है।

8. ज्ञानी के प्रति _____ का त्याग करके जो उनका आश्रित होता है, वह शीघ्र कल्याण को प्राप्त होता है।

9. तीर्थंकर महावीर, गौतम जैसे ज्ञानी पुरुष को भी सम्बोधन करते थे कि समय मात्र भी _____ योग्य नहीं है।

10. _____ सन्मुखता तथा उसकी दृढ़ इच्छा भी देह संबंधी हर्ष-विषाद को दूर करती है।

11. राग-द्वेष के प्रत्यक्ष बलवान निमित्त होने पर भी जिनका _____ किंचित मात्र भी क्षोभ को प्राप्त नहीं होता, उन ज्ञानी के ज्ञान का विचार करते हुए भी महती _____ होती है।

12. जब तक अपने _____ का विचार कर उन्हें कम करने के लिए प्रवृत्तिशील न हुआ जाए तब तक सत्पुरुष का कहा हुआ मार्ग परिणाम पाना

कठिन है।

13. _____ से स्वयं को स्व-विषयक भ्रांति रह गयी है।

14. समयक्त्व के बिना _____ नहीं आता।

15. 'मेरी चित्त वृत्तियाँ इतनी शांत हो जाएँ की कोई मृग भी इस शरीर को देखता ही रहे _____ पा कर भाग नहीं जाए।'

16. आयु का जितना समय है उतना ही समय यदि जीव _____ का रखे तो मनुष्यत्व का सफल होना कब संभव है?

17. यथा सम्भव निवृत्तिकाल, _____, निवृत्तिद्रव्य और निवृत्ति भाव का सेवन कीजिए।

18. _____ के बिना ज्ञान नहीं होता।

19. सत्संग के बिना _____ तरंग रूप हो जाता है।

[प्रश्न - 8] निम्नलिखित पंक्तियां किस वचनामृत से ली गई हैं, लिखें :..... 10 अंक

1. क्षण क्षण में पलटने वाली स्वभाव वृत्ति नहीं चाहिए।

_____

2. विचार के बिना ज्ञान नहीं होता। ज्ञान के बिना सुप्रतीति अर्थात समयक्त्व नहीं होता।

_____

3. भक्ति सब दोषों का क्षय करने वाली है, इसलिए वह सर्वोत्कृष्ट है।

_____

4. आत्मा का धर्म आत्मा में है।

_____

5. मोक्ष कहा निज शुद्धता

_____

6. जहाँ सर्वोत्कृष्ट शुद्धि है वहाँ सर्वोत्कृष्ट सिद्धि।

_____

7. हे जीव! असारभूत लगने वाले इस व्यवसाय से अब निवृत हो, निवृत हो।

_____

8. विचार की निर्मलता से यदि यह जीव अन्य परिचय से पीछे हटे तो सहज में अभी ही उसे आत्मयोग प्रगट हो जाए।

_____

9. जहाँ केवलज्ञान है वहाँ राग-द्वेष नहीं है अथवा जहाँ राग-द्वेष है वहाँ केवलज्ञान नहीं है।

_____

10. जगत के सर्व पदार्थों की अपेक्षा जिसके प्रति सर्वोत्कृष्ट प्रीति है, ऐसी यह देह वह भी दुख का हेतु है तो दूसरे पदार्थों में सुख के हेतु की क्या कल्पना?

_____

11. हे जीव! अब तू संग निवृत्ति रूप काल की प्रतिज्ञा कर, प्रतिज्ञा कर!

_____

12. विचारवान को देह संबंधी हर्ष-विषाद योग्य नहीं है।

_____

13. आत्मा में जो प्रमाद रहित जागृत दशा है, वही सातवाँ गुणस्थानक है।

_____

14. अंत:करण की शुद्धि के बिना आत्मज्ञान नहीं

होता।

15. जहाँ तहाँ से राग-द्वेष रहित होना यही मेरा धर्म है।

16. सत्संग के बिना ध्यान तरंग रूप हो जाता है।

17. जगत में मान न होता, तो यही मोक्ष होता।

18. जिसकी इच्छा प्रतिबंध दूर करने की है, उसे सर्वसंग का त्यागी होना चाहिए।

19. ज्ञानी के वाक्य के श्रवण से उल्लासित होता हुआ जीव, चेतन-जड़ को यथार्थ रूप से भिन्न स्वरूप प्रतीत करता है।

20. अनंतकाल से स्वयं को स्वविषयक ही भ्रांति रह गयी है; यह एक आवच्य और अद्भुत विचार का विषय है।

[प्रश्न - 9] निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक पंक्ति में दें : ..... 10 अंक

1. शीघ्र कल्याण का क्या उपाय है?

2. जीव के दो बड़े बंधन कौन-कौन से हैं?

3. तत्त्व प्राप्ति हेतु उत्तम पात्र जीव में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

4. जीव के दुख के क्या कारण हैं?

5. केवलज्ञान का क्या अर्थ है?

6. सद्गुरु की देह किन दो कारणों से विद्यमान रहती है?

7. जगत में जीव की सबसे अधिक प्रीति किससे होती है?

8. स्वच्छंद दूर करने का क्या उपाय है?

9. सत्पुरुष के कहे हुए मार्ग का परिणाम पाने के लिए क्या करना अत्यंत आवश्यक है?

10. साधक के भीतर ज्ञानी के मार्ग के प्रति परम भक्ति कब उत्पन्न होती है?

[प्रश्न - 10] निम्नलिखित वाक्यों के आशय स्पष्ट करें अथवा प्रश्नों के उत्तर केवल दो पंक्तियों में दें :10 अंक

1. मत का आग्रह छोड़ दें। आत्मा का धर्म आत्मा में है।

2. जहाँ मति की गति नहीं, वहाँ वचन की गति कहाँ से हो?

3. समझ में आए बिना आगम अनर्थकारी हो जाते हैं।

4. जहाँ तहाँ से राग-द्वेष रहित होना यही मेरा धर्म है।

5. परम कृपालु देव श्रीमद् राजचन्द्र द्वारा 'अपूर्व अवसर' काव्य की रचना कब, कहाँ, और किन परिस्थितियों में हुई? श्रीमद् जी की इस भावदशा को देखकर हमें क्या प्रेरणा मिलती है?

खण्ड 3: (गाथा 13 से 21)
अंक : 50

[प्रश्न - 11] गाथाओं की निम्न पंक्ति में रिक्त स्थान भरें : ..... 5 अंक

1. सर्वभाव ज्ञाता _____ सह शुद्धता
2. सादि अनंत अनंत _____ सुख में
3. _____ गोचर मात्र रहा वह ज्ञान अब
4. _____ चार कर्म वर्ते जहाँ
5. छूटे जहाँ सकल _____ संबंध जब
6. अंत समय वहाँ पूर्ण स्वरूप _____ हो
7. उसी _____ प्राप्ति का किया ध्यान मैंने
8. श्रेणी _____ की होकर के आरूढ़ जब
9. शुद्ध _____ चैतन्यमूर्ति अनन्यमय
10. आयुष्य पूर्ण हो, मिटता _____ पात्र जब

[प्रश्न - 12] निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो अथवा कम से कम शब्दों में दें : ..... 15 अंक

1. श्रीमद् जी ने किन कर्मों को 'जली सींदरीवत' की उपमा दी है? [गाथा-16]

_____

2. क्षपक श्रेणी में आने का मुख्य कारण क्या होता है? [गाथा-13]

_____

3. साधना मार्ग में अग्रसर साधक के भीतर वैराग्य पुरुषार्थ को उजागर करती गाथाओं का उल्लेख क्रमबद्ध रूप से करें।

_____

4. चार घाती कर्मों के नाम लिखें। [गाथा-16]

_____

5. अनादि-अनंत काल स्थिति का कोई एक उदाहरण दें। [गाथा-19]

_____

6. साधक के जीवन का सौन्दर्य किन दो साधनों से है?

_____

7. साधक के अनन्य समर्पण भाव की झलक किस गाथा में मिलती है?

_____

8. मनुष्य के मोह को स्वयंभूरमण समुद्र की उपमा दी है। इसका क्या आशय है? [गाथा-14]

_____

9. साधक अपने अंतर अनुभव पर स्वयं के पुरुषार्थ के हस्ताक्षर नहीं करता। तो वह क्या कहता है?

_____

10. किस श्रेणी में जीव के स्वाभाविक गुण प्रकट होते हैं? [गाथा-13]

_____

11. मन-वचन-काया के नहीं होने के परिणाम स्वरूप किसी भी जाति की गति जहाँ संभव नहीं होती, ऐसे स्वरूप को क्या कहते हैं? [गाथा-18]

_____

12. साधक के जीवन में 'अपूर्व अवसर'आए इसके लिए किसके योगबल की आवश्यकता है?

_____

13. गाथा 16 के अंतर्गत जनमजन्मों से किन संग्रहित कर्मों के नाश होने पर साधक का 'अपूर्व अवसर' आता है?

_____

14. 'ऊर्ध्वगमन' का क्या अर्थ है? [गाथा-19]

_____

15. किस दशा के प्रकट होने को महाभाग्य कहा गया है?

_____

[प्रश्न - 13] गाथा 16 के विवेचन अनुसार कर्म-प्रकृति से संबंधित निम्न प्रश्नों के उत्तर दें :.....10 अंक

1. मोहनीय कर्म-प्रकृति किसे कहते हैं, व उसके कितने भेद हैं?

_____

2. स्वयं के अनंत सुख (आनंद) गुण पर आवरण किस कर्म-प्रकृति के कारण आता है?

_____

3. स्वयं के दर्शन गुण पर आवरण किस कर्म-प्रकृति के कारण आता है? उसके कितने भेद हैं?

_____

4. किस कर्म-प्रकृति में स्वयं के ज्ञान-गुण पर आवरण आ जाता है?

_____

5. आयुष्य कर्म-प्रकृति क्या है और वह किस कर्म श्रेणी में आती है?

_____

6. किस कर्म-प्रकृति में स्वयं के अनंत वीर्य (शक्ति) गुण पर आवरण आ जाता है?

_____

7. स्वयं की अमूर्तिकत्व पर आवरण किस कर्म-प्रकृति के कारण आता है तथा वह किस कर्म श्रेणी में आती है?

_____

8. गोत्र कर्म-प्रकृति किसे कहते हैं व इसके कितने भेद हैं?

_____

9. स्वयं के अनंत चारित्र गुण पर आवरण लाने वाली कर्म-प्रकृति कौन सी है?

_____

10. अघाती कर्म श्रेणी में कौन-कौन सी 4 कर्म-प्रकृति आती हैं?

_____

[प्रश्न - 14] कॉलम A और B का सही मिलान करें : ..... 5 अंक

A	B
A. इस स्थिति का आरंभ है, परंतु अंत नहीं।	1. उपशम
B. आत्मा के मूल गुणों को आवृत करने वाले कर्म हैं।	2 अघाती कर्म
C. जहाँ से अंतर्मुहूर्त में पूर्ण वीतराग स्वरूप हो कर केवल ज्ञान प्रगटता है।	3. निरंजन
D. ऐसा स्वरूप जिसमें सभी गुण साथ साथ रहते हुए भी एक-दूसरे का स्वरूप नहीं हो जाते।	4. सादि अनंत
E. इस कर्म-श्रेणी का साधक क्रोध उठने पर क्षमा के वैचारिक भाव से दबाता है।	5. अगुरुलघु
F. जिस स्थिति में आरंभ भी है और अंत भी निश्चित है।	6. अनन्यमय
G. इन कर्मों की स्थिति साधक के अंतिम देह के आयुष्य तक उसके साथ रहती है।	7. घाती कर्म
H. इसका आरंभ नहीं कहा जा सकता परंतु अंत संभव है।	8. सादि सांत
I. जिस दशा में कहीं भी किसी प्रकार का अंजन नहीं है ।	9. कर्म-संयोग
J. इस दशा की उपमा संसार में किसी पदार्थ नहीं की जा सकती।	10. क्षीण मोह गुणस्थान

[प्रश्न - 15] इन प्रश्नों का अपूर्व अवसर व गुणस्थान आरोहण क्रम की अपेक्षा से उत्तर दें :..... 15 अंक

1. सातवें गुणस्थान का नाम लिखें।

_____

2. अपूर्व अवसर की गाथा-3 में कौन से गुणस्थान का सूचन है? नाम लिखें।

_____

3. मंथन-चिंतन-मनन की भूमिका कौन से गुणस्थान में होती है?

_____

4. मिथ्या दृष्टि जीव में मोहनीय कर्म की कितनी प्रकृति का उदय होता है?

_____

_____

5. क्षीण मोहनीय गुणस्थान में कौन सी कर्म प्रकृति का क्षय होता है? नाम लिखें।

6. किस गुणस्थान में साधक के जीवन में संपूर्ण आनंद व स्व-स्थिरता प्रकटती है?

7. अपूर्व अवसर की गाथा-15 में कौन से गुणस्थान का सूचन है? नाम लिखें।

8. मन-वचन-काया के योग का विसर्जन कौन से गुणस्थान में होता है? नाम लिखें।

9. उपशम श्रेणी के साधक का पतन किस गुणस्थान से होता है?

10. सूक्ष्म संपराय गुणस्थान में कौन सी प्रकृति का उपशम या क्षय होता है?

11. कौन से गुणस्थान में साधक जीव अपने अद्वैत स्वरूप में लीन हो जाता है?

12. गुरु-आज्ञा में रहने की साधक की भावना का उल्लेख अपूर्व अवसर की किन गाथाओं में आता है?

13. संयम पूर्वक का साक्षी भाव कौन से गुणस्थान में प्रकट होता है?

14. चौथे गुणस्थान में मोहनीय कर्म की कितनी प्रकृति का उपशम या क्षय होता है? अंक लिखें।

15. स्वरूप समझे बिना धर्म जगत में प्रवर्तता जीव गुणस्थान की किस श्रेणी में जाता है?

FOR OFFICE USE ONLY

Total Marks:

Paper checked by: Signature:

Remarks (if any):